

सुविधा

किसी से भी झूठ बोले लेकिन,
स्वयं से कभी भी झूठ ना बोले !

प्रभात मन्त्र

prabhatmantra.com

पृष्ठ 12 | मूल्य 4 रुपये

RNI No. - JAHIN/2014/59110

पोस्टल रजिस्ट्रेशन : आरएन /257/2024-26

तजा सुनने के लिए देखा



16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023

16.11.2023



आजाद समाज पार्टी झारखंड के सभी 81 सीटों पर लड़ेगी चुनाव : कार्यक्रम रजा भारती

राज्य में गरीब, दलित, किसान व युवाओं की स्थिति बदतर, हर जगह भ्रष्टाचार



प्रभात मंत्र संवाददाता
मेंदीनीनगर : नीलांब-पीलांबर की धरती पलामू जिला अंतर्गत मेंदीनीनगर में भीम आर्मी, आजाद समाज पार्टी की एक प्रेस वार्ता किया गया। जिसमें मुख्य रूप से आजाद समाज पार्टी के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष कार्यक्रम रजा भारती उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुवात बाबा साहब भीमराव अंबेडकर और झारखंड के आजाद भागवान विरसा मुंडा के चरणों में पृथु अर्पित करके की गई। साथ में भगवान विरसा मुंडा की जन्मदिन और झारखंड प्रदेश की स्थापना दिवस की स्थिति को बताया गया। कार्यक्रम में उपस्थित झारखंड प्रदेश अध्यक्ष कार्यक्रम रजा भारती ने विरसा मुंडा की जन्मदिन और झारखंड प्रदेश की स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा की आज झारखंड प्रदेश की स्थापना को राजनीति के बाबत आजाद समाज पार्टी की जनता की धारा रही है। गरीबों, दलित, आदिवासी, मुस्लिम और पिछड़ी जाति पर शोषण बढ़ता ही जा रहा है। राज्य में बढ़ते भारतीय सरकारी कार्यक्रमों के बाद योजना का लाभ लाभकृत तक नहीं पहुंच पा रही है। राज्य के कुछ उपद्रवी और साम्प्रदायिक विधायक की स्थापना भागवान विरसा मुंडा के जन्मदिन पर होना झारखंड प्रदेश के

लिए सौमात्र और सैमाय की बात है। लेकिन झारखंड सरकार की झारखंड की जनता के प्रति गैर जिम्मेदारी रखाई के कारण आज झारखंड प्रदेश की स्थिति काफ़ी गंभीर होती जा रही है। जो सोचनीय है। आज प्रदेश के युवा को रोजगार से वैचारित रखा जा रहा है। किसानों की हालत पानी की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण काफ़ी गंभीर है। शिक्षा के क्षेत्र में भी दलित व

पांकी के एसेंट पब्लिक स्कूल में धूमधाम से मनाया गया स्थापना दिवस



प्रभात मंत्र संवाददाता

पांकी : प्रखंड के लोपसी रोड दिवस की शुभकामनाएं देते हुए खूब मेहनत कर पढ़े एवं बेहतर प्रदर्शन करने की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर स्कूलों बच्चों ने सास्कृतिक कार्यक्रम में एक से बढ़कर एक गीत व नृत्य की शोनदार प्रतीति दी, साथ ही जगरूकता हेतु विभिन्न तरह के नाट्य मंचन भी किया। कार्यक्रम के अंत में बेहतर प्रदर्शन करने वाले आत्र-आत्राओं को स्कूल के शिक्षकों के द्वारा समानित भी किया गया, मौके पर कार्यक्रम में विद्यालय के सभी शिक्षकों समेत सैकड़ों की संख्या में आत्र-आत्राएं एवं अधिभावक उपस्थिति के बाबत आत्र-आत्राओं को स्थापना

भाजपा नेता कर्नल संजय के आवास पर श्री सीताराम जप अखंड कीर्तन हुआ संपन्न



प्रभात मंत्र संवाददाता

हुसैनाबाद : भाजपा सेव्य प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक सह किसान बिहारी संसद कर्नल डॉ संजय कुमार सिंह के आवासीय परिसर में श्री सीताराम नाम जप 24 घंटे का अखंड हरि कीर्तन मंगलवार को विशेष पूजा-अर्चना व हवन पूजन के बाद संपन्न हुआ। श्री सीताराम के मत्रोच्चारण व उद्घोष से पूरा वातावरण भक्तिमय में द्वारा हुआ था। कर्नल संजय कुमार सिंह ने बताया कि पीछे दो साल से शुक्रवार पश्चिम द्वितीय पर पूजा अर्चना के साथ-साथ 24 घंटे के अखंड हरिकीर्तन का आयोजन किया जाता

बहनों ने व्रत के साथ माझ्यों के माथों पर तिलक कर बहनों ने किया तिनकी दीघायि की कामना



प्रभात मंत्र संवाददाता

बंशीधर नगर : अनुदंड मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्रों में बुधवार को भाई के लंबी आयु की कामना का पव भाई दूज यानी गोवर्धन पूजा बड़े ही धूमधाम एवं होशेंबास के साथ मनाया गया। भाई-बहन के अट्टु प्रेम को सूखे इस त्यौहार को जितना उत्साह बहनों में दिखा उतनी ही भाई भी उत्साहित दिखे। भाई के लंबी उम्र की कामना हर बहनों के मन व तिलों में सिद्धयों के खिलाया और भाई की लंबी आयु

बहनों को खेल स्वरूप उपहार दिए।

बहनों अपने घोरों में परंपरागत रूप से गायों की पूजा की तथा पूरी आस्था के साथ यम व यमीनी के आकृति वार्ता गोरंग कूरा गया। इधर महिलाओं ने जीवन हार्मिटल के समीप एन-एच 75 किनारे, हेंहो मोड, स्टेट बैंक के समीप, जगत कल्मीनी, जंगीपुर सहित विभिन्न जगहों पर पूजा अर्चना की गई। जूजा के दीराम बहनों ने सर्वप्रथम दलजुवात से चना गड़ी व गोली काटा को कुटा, तत्पश्च बहनों ने चना गड़ी का प्रसाद भावयों को प्रसाद दिया। बहनों का पर्व मनाया जाता है।

लिए कांटा अपने जीभ में चुभाया बहनों ने भाई दूज का पर्व मना कर

जनता की लड़ाई को अब और भी मजबूती से लड़ा जाएगा : मुमताज खान

भगवान विरसा मुंडा जी के जन्मदिन और झारखंड प्रदेश के स्थापना दिवस के ऐतिहासिक दिन में पलामू जिला की आजाद समाज पार्टी की जिला समिति की धोषणा कर दी गई। अब पलामू जिला में बृथ समिति तक जल पार्टी काम करेगी। वहाँ मैके पर उपस्थित आजाद समाज पार्टी प्रदेश उपाध्यक्ष मुमताज अहमद खान ने कहा की पलामू जिला में भीम आर्मी पूर्व से ही राजनीतिक अनाथ, शोषित, पीड़ित व वैचारित की जनसम्मान, शोषण, अत्याचार पर मजबूती से कार्य कर रही है। अब भीम आर्मी की राजनीति विंग आजाद समाज पार्टी की जिला समिति की धोषणा आज हुई है। अब जनता की लड़ाई को और भी बेहतर और मजबूती से लड़ने की कार्य की जयेगी। और भीम आर्मी आजाद समाज पार्टी की विस्तार जल्द ही प्रखंड, पंचायत, वार्ड और बृथ समिति तक तैयार कर इमानदार, कर्मठ नौजवानों को राजनीति करने का मौका दिया जाएगा। पार्टी ने 16 सदस्यीय जिला समिति की धोषणा की गई है।

इनकी ही स्थिति

कार्यक्रम में मुख्य रूप से आजाद समाज पार्टी प्रदेश संगठन सचिव ई नागरणी रजक, प्रदेश प्रवक्ता राम कुमार रवी, भीम आर्मी की पलामू जिला अध्यक्ष शशीराज भारती, मुख्य महासचिव सुहैल अंसरी, उपाध्यक्ष पर्वीप रावण, सचिव अनुपम भारती, उपाध्यक्ष सकेत पासवान, कोषाध्यक्ष यशवंत पासवान, संरक्षक सीताराम दास, नगर सचिव चंदन भारती, प्रखंड अध्यक्ष मीनां एहमद, अंसरी अंबेडकर, उंदेश आजाद, छोटू अंबेडकर, रामायीष कुमार सहित सैकड़े कार्यकर्ता उपस्थित हैं।

लिए सौमात्र और सैमाय की बात है। लेकिन झारखंड सरकार की झारखंड की जनता के प्रति गैर जिम्मेदारी रखाई के स्थानाएँ अस्थिर होती जा रही है। जो सोचनीय है। आज प्रदेश के युवा को रोजगार से वैचारित रखा जाएगा। योजनाएँ अंबेडकर, उंदेश आजाद, छोटू अंबेडकर, रामायीष कुमार सहित करने की जानकीन में जुट गई हैं।

जनता की लड़ाई को अब और भी मजबूती से लड़ा जाएगा : मुमताज खान

भगवान विरसा मुंडा जी के जन्मदिन और झारखंड प्रदेश के स्थापना दिवस के ऐतिहासिक दिन में पलामू जिला की आजाद समाज पार्टी की जिला समिति की धोषणा कर दी गई। अब पलामू जिला में बृथ समिति तक जल पार्टी काम करेगी। वहाँ मैके पर उपस्थित आजाद समाज पार्टी की जिला समिति की धोषणा आज हुई है। अब जनता की लड़ाई को और भी बेहतर और मजबूती से लड़ने की कार्य की जयेगी। और भीम आर्मी आजाद समाज पार्टी की विस्तार जल्द ही प्रखंड, पंचायत, वार्ड और बृथ समिति तक तैयार कर इमानदार, कर्मठ नौजवानों को राजनीति करने का मौका दिया जाएगा। पार्टी ने 16 सदस्यीय जिला समिति की धोषणा की गई है।

इनकी ही स्थिति

कार्यक्रम में मुख्य रूप से आजाद समाज पार्टी प्रदेश संगठन सचिव ई नागरणी रजक, प्रदेश प्रवक्ता राम कुमार रवी, भीम आर्मी की पलामू जिला अध्यक्ष शशीराज भारती, मुख्य महासचिव सुहैल अंसरी, उपाध्यक्ष पर्वीप रावण, सचिव अनुपम भारती, उपाध्यक्ष सकेत पासवान, कोषाध्यक्ष यशवंत पासवान, संरक्षक सीताराम दास, नगर सचिव चंदन भारती, प्रखंड अध्यक्ष मीनां एहमद, अंसरी अंबेडकर, उंदेश आजाद, छोटू अंबेडकर, रामायीष कुमार सहित सैकड़े कार्यकर्ता उपस्थित हैं।

लिए सौमात्र और सैमाय की बात है। लेकिन झारखंड सरकार की झारखंड की जनता के प्रति गैर जिम्मेदारी रखाई के स्थानाएँ अस्थिर होती जा रही है। जो सोचनीय है। आज प्रदेश के युवा को रोजगार से वैचारित रखा जाएगा। योजनाएँ अंबेडकर, उंदेश आजाद, छोटू अंबेडकर, रामायीष कुमार सहित करने की जानकीन में जुट गई हैं।

जनता की लड़ाई को अब और भी मजबूती से लड़ा जाएगा : मुमताज खान

भगवान विरसा मुंडा जी की लड़ाई के समीप एक लकड़िया का शव मिला

हुसैनाबाद (पलामू) (प्रभात मंत्र संवाददाता) : जपला रेलवे स्टेशन के समीप लेफार्म संख्या एक के बाहर पक्षियाँ की ओर रेलवे क्रॉसिंग की जाने वाला रास्ता में एक वर्षीय काली गांव की विवाह स्थान वहाँ हो गया है। त्रिकाल वैदेशीय अनुदान द्वारा इस स्थान पर एक लकड़िया का शव मिला। इसकी लेफार्म संख्या एक वर्षीय काली गांव की विवाह स्थान वहाँ हो गया ह

समाज से कानून का मुठभेड़

बदलते समाजक व्यवहार से हिमाचल पुलस का मुकाबला अगर यू
ही कानून व्यवस्था को गच्छा देता रहा, तो सुकून की ये गलियाँ
नहीं बचेंगी। कानून के दायरे और परिभाषा को गढ़ते पुलस इतनाम ने मान लिया
के एक भोला-भाला हिमाचल उसकी नोक के नीचे रहेगा, लेकिन अब मसले
परेशान करने लगे हैं। समाज अब सामुदायिक संगत से बाहर निकल कर अपने
निनोरथ के लिए निरंकुश हो रहा है। यह समाज अब 'मुद्रा' नहीं, प्रगति की हर स्पर्धा
में संसाधनों की प्राप्ति के लिए नए कदम रखने लगा है। जीवन के संघर्ष हिमाचल
में भी बदल है और बदला है आर्थिकी का संचार, इसलिए रियल एस्टेट अपनी छेनी
में पर्वत को काट रहा है। जमीनों के सौदे और सौदों की तह जीव में सत्ता, राजनीति,
वडे संपर्कों की कानाफूसी तथा प्रभाव का अधिकार बढ़ रहा है। संतोषगढ़ में बारात
के स्वागत में सजी महफिल खून की लकीरें खींच देती हैं, तो वहां संघर्ष ऐसे
अहंकार से पैदा होता जो सार्वजनिक चरित्र में खूबार वर्चस्व का प्रशस्तन बन जाता
है। नगरोटा बगवां में दो भाइयों के बीच गोलीबारी से धरती लाल हो गई, तो इसका
अर्थ यह भी है कि हमारा संघर्ष अब घाटक इरादे रखता है या हम कानून की
परिभाषा से ऊपर अपने दिलों दिमाग में
शहर बनवाते हैं। ऐसे अनेकों आपातों के

जीवन के संर्ध मिहावल में भी बदले हैं और बदला है आर्थिकी का संचार, जो सलिल रियल एस्टेट अपनी छेनी से विवरित की काट रहा है। जमीनों के सोदे और सोदाँ की तजीब में सत्ता, जो जनीति, बड़े संपर्कों की कानाफूसी विद्या प्रभाव का अधिकार बढ़ रहा है। मौजूदा अवधि में सजी विहिल खून की लकीरें खीट दीती हैं, जो वहां संर्धेएसे अंकारा से पैदा होता है। जो सार्वजनिक चित्रित में खुंखर वर्चस्व प्रदर्शन बन जाता है। नारोटा बगवान दो भाइयों के बीच गोलीबारी से धरती नाल हो गई, तो इसका अर्थ यह भी है कि हमारा संर्ध अब घातक इरादे खत्ता है या हम कानून की परिभाषा से उपर अपने दिलों दिमाग में नहर रखते हैं। ऐसे अनेकों अपराधों के बीच हमारी उपलब्धियों का एक भयानक चेहरा समाज के भीतर भोलेपन का चीरहरण कर रहा है। दूसरी ओर सियासी दखल ने समाज के बीच अगर अपने लटैत पैदा किए, तो पुलिस की निष्पक्षता को निकम्मा बना दिया। सवाल तो अब कानून व्यवस्था से ऊपर उठकर न्याय की प्रक्रिया तक लाचार मजमून हो गए। यह इसलिए भी कि समाज अपने सामने के अति निर्लज्ज व घातक घटनाक्रम के किनारे हो गया। पिछले तीन दशक में आई संपन्नता की मीनारे पर कई संदेहों के छीटे हैं और अगर इन्हीं बुलदियों पर समाज का एक हिस्सा बैकाब हो रहा है, तो मुद्रधरों में पहाड़ी परंपराओं की चोख कौन सुनेगा। पालमपुर-धर्मशाला के एक व्यवसायी द्वारा शुरू हुआ न्याय का संर्ध उस संर्ध से ऊपर है, जो एक आम हिमाचली के सपनों में पिचल कर पसीना बनता है, लेकिन यह पहला अवसर है जब एक व्यक्ति के तमाम गेले पुलिस व्यवस्था के सर्वेसवां से है। इस तनातीनी को हम न झुठला सकते हैं

और न ही पचा सकते। आरोप लगाने वाला न तो हवा में तीर मारने का संकेत दे रहा था और न ही कानून व्यवस्था पर उठे प्रश्न अताकिंह है। कुछ तो है इस धूंएं के पीछे, जबरना आसमां यूं ही काला नगर न आता। यहां साधे प्रश्न पुलिस विभाग के मुखिया बने हैं और जवाब सुखबू सरकार को देना पड़ेगा। बेशक अब कानून के हिसाब में भी खेल बहुत है, मगर नारों में जो आए इंकालाव वहाँ है। कानून से जिरह अगर कानून की बस्ती में होने लगे, तो हर अंधेरे से पूछना पड़ेगा कि आखिर पहरेदार सो कहाँ हाँ। यहां कानून की रक्षक हिमाचल सरकार को होना पड़ेगा ताकि व्यवसायी के आरोपों की सचाई सामने आए। आरोपों की सत्यता अभी साभित होनी है, लेकिन व्यापरिक प्रतिद्वंद्विता में पुलिस का व्यवहार एकपक्षीय हो जाए या किसी एक का वहयोगी नगर आए तो आने वाले दिन समाज के सांचे में भी सौदेबाजी करेंगे। हमाचल की आर्थिक प्रगति से जुड़ी चुनौतियों में संगठित हो रहे आपराधिक तत्वों को समझना होगा। कारोबार, उद्योग, पर्यटन व छोटे-छोटे व्यवसायों में सपनों का एक नया संसार उभर रहा है, जहाँ बैंकिंग क्षेत्र, सरकारी अनुमतियां व कानून व्यवस्था की देखरेख जरूरी है। साइबर अपराधों के साथ-साथ प्रदेश में परिवहन की दृष्टि से भी पुलिस की भूमिका बदल रही है। कम्युनिटी पुलिसिंग, ट्रैफिक नियंत्रण के अलावा पर्यटन को दृष्टि से स्मार्ट पुलिस बल की परिभाषा को मुकम्मल बनाने के लिए संवेदनशीलता, आधुनिक गतिशीलता, नियुक्तियों में पारदर्शिता तथा पुलिस-पब्लिक रिलेशन में निखार की अति आवश्यकता है। पुलिस व्यवस्था के शिखर संबोधन राजधानी शिमला से जो कहते हैं, उससे कहीं अलग भ्रंतरराजीय सीमाओं पर स्थितियां बदल रही हैं। आज की तारीख में पर्यटन स्थलों, व्यावसायिक व धार्मिक स्थलों एवं शहरीकरण को जिस तरह की सतर्कता व पुलिस व्यवस्था चाहिए, उसका इंतजाम करना होगा। बहुत सारे पुलिस के पद शिमला में अव्यावहारिक व अप्रासंगिक हो चुके हैं, जिन्हें नई चुनौतियों के तहत वकेंट्रीकृत करना होगा। नगर निगम क्षेत्रों के लिए पुलिस आयुक्तालय तथा सीमांत चौकसी के लिए बीबीएन में एक अतिरिक्त डीजीपी का पद सृजित करके उसके तहत पांचटा सहित, कालांब दो से आगे बीबीएन, ऊना तथा कांगड़ा के ऊपरुपर तक की जिम्मेदारी सुनिश्चित करनी होगी।

ପ୍ରକାଶକ

अधिकारी पर अधिगति खाते
फिल्म अभिनेत्रियों रशिमका मंधाना और कैटरीना कैफ

‘डीपफेक’ वीडियो बनाकर दुनिया भर में जिस तरह सारित किए गए, उससे लगता है कि हम, मनुष्य, कितने असहाय और असुरक्षित हैं। कृत्रिम बौद्धिकता किस तरह हमें छल सकती है और अपना शिकार बना सकती है। इस प्रौद्योगिकी पर विश्व इतरा रहा है और सार्वजनिक इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है। मनुष्य अहंकार में है कि उसने एक और मानव-जाति की रचना कर ली है। वह नहीं जानता कि यह मानवता के लिए कितना खापनाक खतरा है, नंकट है! ‘डीपफेक’ बनाना मुश्किल नहीं है। उसके रचयिता चेहरे और आवाज की नकल करने में सक्षम हैं। यह किसी की भी गरिमा, पहचान और स्वयंतता का

गी संकट नहीं है, बल्कि इस घोखाधड़ी से राष्ट्रीय विद्रोह पनप सकता है। दो देशों के संबंधों में तनाव फैल सकता है। सांघरणिक दंगे फैल सकते हैं। अफवाहें एक तर्ज बनकर समाज और देश में व्याप्त हो सकती हैं और उनके फलितार्थ कितने भयानक हो सकते हैं। धोखा और दुष्प्रचार एक लोकतंत्र को पलट भी सकते हैं। वेतीय फ्रॉड किए जा सकते हैं। कुल मिलाकर राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवता के लिए गंभीर संकट पैदा हो सकते हैं। दरअसल हमें आसान और बनी-बनाई जिंदगी की आदत पड़ गई है। आखिर कृत्रिम बैंडिकता की जरूरत ही क्या है? जब यह नहीं थी, तो क्या नए अविक्षय नहीं किए गए? क्या मनुष्य अंतरिक्ष में नहीं गया? मना नए और सशक्त सहित्य की रचना नहीं की गई? हम स्वावलंबी थे, तो क्या बासी रहियाँ, बाहें-टांगें टूट गई थीं? आज इतने पराश्रित क्यों हो रहे हैं हम? क्योंकि हम आलसी होते जा रहे हैं। उसी का गलत फायदा 'डीपफेक' जैसी प्रौद्योगिकी उठा रही है। जिसकी रचना ही 'कृत्रिम' है, वह एक जीते-जागते मनुष्य का विकल्प कैसे हो सकती है? 'डीपफेक' ने यहां तक साजिश रची थी कि यूकेन राष्ट्रपति जेलेस्की को 'नकली' बनाया और सेनाओं को आदेश दिया कि वे बसी सेनाओं के सामने आत्म-समर्पण कर दें। इस आदेश से यूकेनी सेना में अपने गीरा राष्ट्रपति के प्रति असंतोष भड़क उठा। वक्त रहते असलियत समझ में आई और हालात पर काबू पा लिया गया। अलबत्ता 'डीपफेक' ने तो अराजकता और विद्रोह के बीजों को ही दिए थे। ब्रिटेन की एक ऊर्जा कंपनी के मुखिया नकद पैसा जेजने की घोखाधड़ी के शिकार हो गए, क्योंकि कंपनी के जर्मन सीईओ ने फोन केया था। दरअसल वह फोन कॉल ही 'डीपफेक' थी और आवाज नकली बना कर फोन किया गया था। बहरहाल अब भारत में भी नकलीपन की यह बीमारी जड़े कला चुकी है, लेकिन हमारे देश में कड़ी सजा की कोई कानूनी धारा नहीं है। मन्त्रवत्ता सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने निर्देश दिए हैं कि सोशल मीडिया और इंटरनेट कंपनियां, जिनमें आईटी मध्यस्थ कंपनियां भी शामिल हैं, रूल 3(2) (बी) के तहत किसी भी फर्जी वीडियो और पोस्ट को शिकायत के 24 घंटे में भीतर ही हटाएं अथवा उस तक किसी की पहुंच संभव न हो सके। मंत्रालय ने वह भी घोषणा की है कि 'डीपफेक' के दोषियों को 3 साल की अधिकतम जेल और एक लाख रुपए का आर्थिक दंड भुगतना पड़ेगा। यह अधिकतम सजा है, जिसे न्यायाधीश कम करके भी सुना सकत है। सवाल यह है कि एक बार किसी का 'डीपफेक' वीडियो सार्वजनिक हो गया, तो वह अल्पकाल में ही करोड़ों लोगों तक पहुंच सकता है। उसकी निजता गरिमा पहचान को नकसान हो जाएगा।

उत्तर प्रदेश में अफसरशाही के चलते केवल आम आदमी ही नहीं मंत्री सांसद और विधायक भी परेशान हैं

योगी राज में विधायिका पर भारी है यूपी की कार्यपालिका

३८

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगा आदत्यनाथ ने केवल सख्त शासक हैं। उनकी छवि

की साथ-सुधरी है। करीब साड़े छह: साल के शासनकाल में भी सरकार पर भ्रष्टाचार का एक भी आरोप नहीं लगा है। यह अच्छी बात है। जनता भी ऐसी ही सरकार चाहती है, लेकिन का यह मतलब नहीं है कि योगी जोड़कर योपी के अन्य राजनेता वईमान और भ्रष्टाचारी हैं। सभी दलों में अच्छे-दोनों किस्म के नेता मौजूद हैं। सत्तारूढ़ भारतीय जनता की भी यही 'मिजाज' है। यहां भी अन्य दलों की तरह दोनों स्म के नेता देखने को मिलते हैं। मगर बीजेपी आलाकमान अपने किसी भी नेता पर भरोसा नहीं है। यहां तक की योगी कार के मंत्री भी सरकारी मशीनरी के सामने 'पंख करे' गर आते हैं। इसकी वजह है कि बीजेपी में सभी नेताओं को ही तराजू में तैला जा रहा है। कहने को तो उसके तमाम जनप्रतिनिधि होने का भी रूतबा रखते हैं, लेकिन इन्हें पूरी हसे दंतविहीन बना दिया गया है। यह न तो कभी अपने क्षेत्र पुलिस उत्पीड़न के शिकार लोगों के पक्ष में थाने जा सकते हैं, रासन-प्रशासन में बैठे अधिकारी उनकी सुनते हैं। ऐसा लिए है क्योंकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सरकारी नीरी को आदेश दे रखा है कि यदि कोई बीजेपी नेता उनके निकी की सिफारिश लेकर आये तो उसकी बात सुनने की वश्यता नहीं है, बल्कि अधिकारी अपने विवेक से सही गलत फैसला लें। यह सब बातें किसी फाइल में तो नहीं कोड की हैं, परंतु राजनीति के गलियारों में यह चर्चा आम है कि जिस हसे समाजवादी पार्टी की सरकार के समय उसके (सपा) सद/मंत्री/विधायक आदि जनप्रतिनिधि पुलिस और सरकारी नीरी पर दबाव बना लेते थे, वैसा दबाव बीजेपी के प्रतिनिधि नहीं बना पाते हैं। होता यह है कि जब भी बीजेपी कोई नेता किसी सरकारी अधिकारी या पुलिस के पास चता है तो उसे सीएम योगी का फरमान याद दिला दिया जाता है। या यों कहें उन्हें अपमानित करके वापस भेज दिया जाता है। हालात यह है कि यूपी सरकार के अधिकारी बीजेपी के असी भी जनप्रतिनिधि को भाव नहीं देते हैं तो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पास भी ऐसे नेताओं से मिलने का टाइम नहीं आता है। इसको लेकर योगी के पिछले शासन में बीजेपी के प्रतिनिधियों ने विधानसभा के अंदर प्रदर्शन भी किया था,



से दूरी हमेशा चर्चा में रहती है। यहाँ तक कि दिल्ली भी इसमाले में कुछ नहीं कर पा रहा है, क्योंकि आज की तारीख पार्टी के अंदर योगी का कद काफी बढ़ा हुआ है, इसलिए उनकी ही से चुनौती भी नहीं मिलती है। इसी के चलते पीड़ितों आम लोगों से पुलिसकर्मियों के दुर्रव्यवहार के मामले तो आदिन सामने आते रहते हैं। पुलिस अधिकारियों व कर्मियों द्वामाननीयों से भी अच्छा व्यवहार न किए जाने की शिकायतें बरही हैं। कहने को तो सीएम योगी आदित्यनाथ अक्सर कह मिल जाते हैं कि जनप्रतिनिधियों का पूरा सम्मान किया जाये। इस बार भी योगी द्वारा माननीयों के प्रति शिष्टाचार व अनुभव प्रोटोकाल का अनुपालन सुनिश्चित कराए जाने के कड़े निर्देश दिए गए हैं, लेकिन इसका असर होते नहीं दिख रहा है। उत्त प्रदेश में अफसरशाही के चलते केवल आम आदमी ही न मंत्री सांसद और विधायक भी परेशान हैं। यह लोकसेवक लम्समय से कार्यपालिका के चलते होने वाली अपनी परेशानी शिकायतों के रूप में सामने रखते रहते हैं। जातब्य हो, उत्त प्रदेश में योगी सरकार ने इंटीग्रेटेड विरोन्स रिझर्सल सिस्टम लागू कर रखा है, जिसे आइजीआरएस पोर्टल के रूप में जाना जाता है। इसमें कोई भी सीधे मुख्यमंत्री से शिकायत कर सकता है। इस पोर्टल पर पिछले दो वर्षों में आम जनता के अलावा योगी के कई मंत्रियों, सांसदों और विधायकों ने भी कार्यपालिका की शिकायत दर्ज कराके अपनी लाचारी सार्वजनिक की है जिसमें काफी चौंकाने वाली बातें सामने आई हैं। इन माननीयों की शिकायत से पता चलता है कि प्रदेश में तमाम अफसरों आमजन तो दूर मंत्रियों, सांसदों और विधायकों की बात को तब तबज्जो नहीं देते हैं और उनके सुझाए गए कार्यों को बेह

जुड़े लोगों तथा लेखन में किताबें पड़ी हों कि क

जाता है कि

कि वे कलाकार हैं, लेखक हैं, रंगकर्मी हैं, अवश्यकार हैं, इसलिए बढ़िया काम के लिए आवश्यकता रहती है, अतः कलाकार का गुण है, या उसका अधिकार है। बड़े अभिनेताओं के मूड के चर्चे अख्खारों व प्रते रहते हैं और लोग चटखारे ले-लेकर उन्हें से कला अथवा लेखन से जुड़ने वाले नए लोग किंवित कि लेखक अथवा कलाकार का मूडी होना चाहिए। यह सही है कि किसी काम में मन न हो तो किसी दिया हो नहीं सकता। इसमें भी दो राय नहीं सपास के लोगों, घटनाओं और वातावरण का नियन्त्रित यानी मूड पर पड़ता है और कई बार ऐसे-सी बात से भी बना बनाया मूड बिगड़ जाता काम में पूरी तन्मयता से लगे होते हैं कि कोई छछ कह देता है या कर देता है कि हमारा मन इ जाता है। लेखक भी आम आदिमियों की हर शकार है और उसके लिए उसे दोष नहीं दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार यह भी याद रखा जाना चाहिए, लेखक होने के कारण ही महामानव नहीं होना चाहिए। आदतें पाल ले जो उसकी कमजोरी सिफर लेखक अथवा कलाकार हो जाने मात्र से नहीं काम से बचने की बहानेबाजी के लिए मूड लेते रहना चाहिए, वरना हमें पता भी नहीं हमारी यह आदत हमारी कमजोरी बन गई। अब व्यवस्थित नहीं होते अथवा योजनाबद्ध ढंग दरते तो यह समझ नहीं आता कि काम कहां से काम शुरू करना चाहते हुए भी हम काम शुरू मूड न बनने का यह एक बड़ा कारण है। यह नियत्य है कि यदि हम एक नियत दिनचर्या के और योजनाबद्ध ढंग से कार्य करें तो मूड की ही समाप्त हो जाती है। अतः मूड न बनने का नाते ही आत्म-निरीक्षण कीजिए और देखिए कि स्थित न होने अथवा समुचित कार्य योजना न हो काम से नहीं बच रहे। इस आत्म-निरीक्षण से नामने होगा और फिर मूड का इलाज करना जासान हो जाएगा, अन्यथा आप को पता भी नहीं हो पूर्ण मूड के नाम पर खुद ही स्वयं को धोखा दरे विकार कार्य आरंभ कर दना और उसमें लगे रहना सर्वोत्तम उपाय है। आप जब चाहें, जहां चाहें करते हैं। इस संबंध में यह कहने में कोई गुरेज नहीं कि मूड न बन पाने का एक बड़ा कारण स्थित होना है और दूसरा कारण काम की जानकारी न होना होता है। अव्यवस्थित होने का कि हमारे आसपास इतने कागज, फाइलें या काद्दम से उपर लगे रहने का काम यह है कि हम काम शुरू करने से पहले उस काम से संबंधित सारी आवश्यक चीजें अपने पास न रखें और हमें उन चीजों के लिए बार-बार उठना पड़े जिससे काम में अनावश्यक व्यवधान पड़ता हो, इससे भी या तो मूड उखड़ जाता है या मन भटक जाता है और काम में एकाग्रता नहीं बन पाती जिससे काम या तो गलत हो जाता है या फिर देर से संपन्न होता है। ऐसे ही काम शुरू करने से पहले काम की सांगोपांग जानकारी न होना, काम की वारीकियों को न समझना भी हमारा मूड बिगड़ने के लिए काफी है। काम शुरू कर देने के बाद जब कठिनाइयां आयें और उनका हल न सूझे तो अक्सर हम बेजार हो जाते हैं और हमारे मन को काम से भागने का बहाना मिल जाता है। अतः काम शुरू करने से पहले काम की वारीकियों को समझना भी आवश्यक है ताकि काम बीच में न रुके या उसमें कठिनाइयां न आयें। कलाकारों और लेखकों में अक्सर यह धारणा पायी जाती है कि कला से जुड़े होने के कारण वे आम आदमी से ज्यादा संवेदनशील हैं। कई बार तो वे अन्य लोगों को अपने से कम कविल और स्वयं को अपेक्षाकृत ज्यादा संस्कारित अथवा सुसंस्कृत भी मानने लग जाते हैं। एक बार यह भवना मन में आ जाता तो आदमी दूसरों से सीखना बंद कर देता है। हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि लोहार का हथौड़ा चलाना और नाई का बाल काटना भी एक कला है। चित्रकार, मूर्तिकार, रंगकर्मी और लेखक ही नहीं, बल्कि नक्षानवीस, बढ़ी, कुम्हार और लोहार भी कलाकार हैं। कलाकार बनने के लिए अक्षरजान लाभदायक तो है, परमावश्यक नहीं। बढ़िया से बढ़िया कलाकार भी घटिया इनसान हो सकता है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। हम सब जानते हैं कि अच्छा इनसान बनने के लिए कलाकार होना कोई शर्त नहीं है। बल्कि इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे जहां अच्छे माने जाने वाले लोगों ने कला को फालतू लोगों का शौक माना। इसी प्रकार अधिकारी के रूप में, नियोक्ता के रूप में, पूँजीपति अथवा राजनीतिज्ञ के रूप में लेखकों और पत्रकारों की बैद्धमानियों के उदाहरण भी कम नहीं हैं। अतः हमें स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि लेखन अथवा किसी भी प्रकार की कला विशेषज्ञता का एक अन्य क्षेत्र मात्र है। लेखक अथवा कलाकार होकर कोई व्यक्ति महामानव नहीं बन जाता, अतः इस बारे में हमें किसी भ्रम में नहीं रहना चाहिए। हां, यह अवश्य हो सकता है कि कोई कलाकार, कोई अभिनेता, कोई गायक अपनी कला के कारण आम आदमी से ज्यादा मशहूर हो जाए, लेकिन यह किसी कलाकार को महामानव मान लाना भूल है। कलाकारों की आदतों का जिक्र इसलिए कि बहुत से लोग दूसरे सफल लोगों की नकल करने लगते हैं और उनमें जो नखरे सफलता के बाद आए, उन नखरों की नकल भी करने लगते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि किसी भी क्षेत्र में सफल व्यक्ति अपनी सफलता के कारण अपना मूल्य बढ़ा सकता है।

शिक्षा और परोपकार

१५३

वरसों से सुनत आ रहे हैं। देश आजाहुआ तो शिक्षा क्रांति की घोषणा कर दी गई थी। अइस अशिक्षित भीड़ भरे देश में कोई इपढ़-लिखे विनही रहेगा। पढ़ाई का प्रमाणपत्र, डिप्लियो हार बच्चे देहाथ में होंगी। वे नौकरी के लिए कतार लगा बरस इन्तजार नहीं करेंगे। रोजगार दफतरों की धूल फांककांक कर आखिर उनके चक्कर लगाना बदं नहीं करेंगे। हालात कुछ इस कद्र हो जाएंगे कि नौजवान पढ़-लिख कर इनके चक्कर लगाने के बजाय ठेठे पर विदेश भिजवाने के संदिध दफतरों के बाह्य चक्कर लगाना शुरू कर देंगे। फिर भी कोई इन सूचता कि इतने लोग रोजी रोटी की तलाश में अपनी देश छोड़ कर दूसरे देश कैसे पहुंच गए? ? अवैध रूप से वहां पहुंचे लोग नम्बर दो के असामान्य प्रवासियों के रूप में जीवन जीने के लिए तैयार हैं, लेकिन अपनी देश में अच्छल दर्जे का नागरिक बन जाने के लिए प्रस्तुत नहीं। क्योंकि वहां अच्छल दर्जे का नागरिक बन कर जीने का अर्थ है रोजगार मेलों में नौकरी

पर काम करने के लिए हामी भरना । मनरेगा के ना पर ऐसी दिहाड़ियों को सिर माथे पर लेना जो इ नौकरी करते हुए भी भुखमरी की सौगत दे सकें । ना तो भला बताइए देश की तरकीब के निरन्तर दावों बीच देश भुखमरी सूचकांक में कुछ पायदान नी क्यों उतर गया ? जो भुख से मरे उनमें पढ़े-लिकितने थे, और अनपढ़ कितने ? भूख से आई मौत शिक्षित आशिकित का अन्तर नहीं करती । पदा-लिया काम करने को न जाने कब से तैयार बैठा है, औं सरकारी तौर पर उसे पकड़े बेचने की सलाह दी रही है । विद्या मंदिर, जिन्हें शिक्षालय कहा जाता जहां सरस्वती की पूजा होनी चाहिए, वहां पूजनदारह दोते जा रहे हैं । उनके इर्द-गिर्द आईलैट अकादमियां कुरुमुसों की तरह उग आई हैं । व पढ़ने वालों की नहीं विदेश भाग सकने वालों की भी लगी है । ऐसे विशेषज्ञ मिल जाते हैं, जो बताते हैं मान्य पलायन के लिए अपेक्षित बैड न भी मिले तो उन्हें परेस भिजवा दिया जाएगा । यह दीगर बात

अरब और अफ्रीकी देशों में। चांद सितारों को छूती अटारियां पाने की तमन्ना के साथ विदेश पलायन की होड़ लगायी थी, अब यह पहुंचे तो छप-छप कर जीना पड़ता है। आखिर यहां भी तो सेना क्षेत्रों के नाम पर क्रीत दासों की जरूरत पड़ती रहती है, अतः स्वागत। वहां पहुंच गए तो पीआर से लेकर ग्रीन कार्ड की जरूरत पड़ती रहेगी। जो अपना आधार कार्ड न कर सके, शायद वे ग्रीन कार्ड कर सकें। उम्मीद रखो। और इधर यह देश जो युवाशक्ति का देश है, वहां किंकन्त्रव्य-विमूढ़ अपने नौजवान हैं। मुख्यमंत्री कहते हैं, 'उनके राज्य की सबसे बड़ी विलक्षणता यह है कि अब यहां नौकरी पाने के लिए रिश्वत नहीं देनी पड़ती' और विश्व का भ्रष्टाचार सूचकांक बताता है कि भारत का भ्रष्टाचार सूचकांक चारों खाने चित है। भ्रष्टाचार उन्मूलन के ऊंचे नारों के बावजूद आज भी वह उसी निम्नतम स्तर पर खड़ा है, जैसे कल खड़ा था, बल्कि अब तो यह हालत हो गई है कि देश में कोई काम के बल पर नहीं होता।

